तेलुगु रचयित्री यद्दनपूड़ी सुलोचना रानी के उपन्यासों में नारी जीवन के विभिन्न आयाम

- सोहेब खान

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र हमें सुलोचना रानी के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध रूपों को दर्शाता है। सुलोचना रानी अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समय की स्त्री की दशा को दर्शाती है। इनकी रचनाओं में स्त्री, अन्याय के प्रति आवाज उठाती, शिक्षित, परिवार चलानेवाली, आक्रोश से भरपूर आदि रूपों में दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुलोचना रानी के उपन्यासों के माध्यम से स्त्री के विविध आयामों को उठाया गया है। समाज में मध्यवर्गीय स्त्री की क्या दश थी, तत्कालीन समाज में स्त्री को किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता था, आर्थिक रूप से प्रबल न होनी की वजह से किन कठनायियों से गुजरना पड़ता था,परिवार में माँ-बेटी, सास-बहु, भाई-बहन, माँ-बेटा के रिश्ते कैसे हो,आदि को सुलोचना रानी जी ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है। सुलोचना रानी जी अपने उपन्यासों में सशक्त स्त्री पात्रों को गढ़ कर उनके माध्यम से स्त्री की दशा को दर्शाने का प्रयास किया है।

बीज शब्द : मध्यवर्गीय स्त्री, स्त्री की दशा, परिवार, अस्मिता, समाज, आर्थिक परिस्थिति।

समाज में स्त्री को विविध रूपों में स्वीकारा गया है जैसे की माँ, बहन, पत्नी, भोग विलास की वस्तु आदि। समाज हो या चाहे घर महिला को हर जगह एक वस्तु की तरह की देखा गया है। मध्यवर्गीय महिलाओं को समाज में अनेक प्रकार की कठनयियों का सामना करना पड़ता है। वह आर्थिक रूप से प्रबल नहीं होती है, समाज में उनको कोई मर्यादा नहीं देता, वह हर समय आर्थिक आभाव के कारण या परिवार चालाने के कारण अपने निजी आशाओं का दमन करती हैं। भारतीय स्त्री अपने परिवार के लिए अपने खुद के सुख-चैन को त्याग कर अपने परिवार का ध्यान रखती है। समाज में अभिजात वर्ग की महिलायें भी है, उनके पास धन-दौलत रहने पर भी वे अपने लिए खर्च न कर अपने परिवार के खुशी में ही लगे रहते हैं और उन्हें भी कई तरह की निजी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

स्त्री के इन्ही रूपों का चित्रण सुलोचना रानी के उपन्यासों में हमें देखने मिलता है। तेलुगु साहित्य में सुलोचना रानी जी ऐसी रचयित्री है जो मध्यवर्गीय महिलाओं की इच्छाओं अपने रचना के माध्यम से कथा साहित्य में जगह दी है। वह एक कल्पनामई, साहसी और सशक्त महिला कथाकार है। उन्होंने अबतक लगभग सत्तर उपन्यासों की सृष्टि की है। जिनमें 'मीना', 'कीर्ति कीरिटालु', 'सहजीवनम', 'सीतापति', 'सेक्रेटरी', 'अग्निपूलु', 'मौनपोरटम', 'जीवना तरंगालु' 'राधाकृष्ण', 'छंडीप्रिया', 'प्रेमालेखलु', 'बंगारुकललू' आदि प्रमुख है। इनके अधिकांश उपन्यास आज की नारी के अस्तित्व को दर्शाते हैं। जीवन के वास्तविकताओं और समस्याओं से इनके उपन्यास जुड़े हुए है। सुलोचना रानी के उपन्यास में उनके आसपास के जीवन में स्थित मध्यवर्गीय और उच्चतम मध्यवर्गीय परिवरों की कहानी रहती है। इनके पात्रों को जब पढ़ते हैं तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन में खुशी से रहने के लिए थोड़ा सा प्यार, स्नेह, जीवन के बारे में जानकारी, समाज में गौरव आदि सुखमय जीवन के लिए काफी हैं। सेक्रेटरी और मीना उपन्यास में मध्यवर्गीय महिला और अभिजात महिला महिला के बीच विरोधाभास दिखाई देता है। 'सीतापति' और 'सहजीवनम' उपन्यास में पति-पत्नी के संबंधों में नारी का स्वरूप तथा नारी का आधुनिक रूप दिखाई देता है।

प्रस्तुत आलेख में हम सुलोचना रानी के उपन्यास "**सेक्रेटरी**", "**मीना**", "**सहजीवनम**" के माध्यम से उनके रचनाओं में चित्रित नारी जीवन से परिचित होंगे।

"सेक्रेटरी" उपन्यास सुलोचना रानी जी का पहला उपन्यास है जो "**1964**" में प्रकाशित हुआ। अपने पहले ही उपन्यास में लेखिका ने एक मध्यवर्गीय महिला का ऐसा चित्रण किया है कि जो सभी पाठकों के मन पर गहरा प्रभाव छोडती है। इस उपन्यास की नायिका जयंती है जो एक मध्यवर्गीय परिवार से आती है। इस उपन्यास में एक मध्यवर्गीय महिला का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, बातूनीपन और विनम्रता आदि ये सभी गुण लेखिका ने जयंती में रखा। जयंती अपने मेहनतकश व्ययहार से महिला संघ में नौकरी हासिल करती है। जयंती अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहती है। वह अपने दफ्तर में खूब मेहनत कर काम करती है लेकिन कुछ कारणों की वजह से उसे वहाँ से निकाल दिया जाता है। इसके बाद जयंती एक अमीर व्यापरी राजशेकर के पास सेक्रेटरी रूप में काम करना शुरू करती है लेकिन वह एक शर्त रखती है कि जब भी उसे कोई दूसरा काम मिल जाए वह यह नौकरी छोड़ देगी। वह काम करने के दौरान दोनों

आपस में एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। दिन बीतते रहते हैं और इन दोनों में एक दूसरे के प्रति आकर्षण बड़ता रहता है। कुछ ऐसी घटनाएं घटती है जिसके कारण राजशेकर जयंती को हमेशा के लिए अपने पास रख लेने का निर्याय करता है। इसका एक मुख्य कारण है जयंती के दादी की मृत्यु। जिसके कारण वह अकेली पड़ जाती है, इसीलिए राजशेकर उसे अपने घर में ही रखने के तय करता है। लेकिन जयंती आत्मसम्मान से पूर्ण व्यक्तित्व वाली महिला है। वह उस घर में रहने से मना कर देती है।

जब राजशेकर चार लोगों के बीच जयंती को डाँटता है तो तब वह यह अनुग्रहन करता है कि मेरी अनुचित बातों से मैंने जयंती का दिल दुखया है और मुझे उससे माफी मांगिनी चाहिए। जब ये बात जयंती को पता चलती है तो राजशेकर के प्रति जयंती के मन सम्मान बड़ जाता है। इससे हमें पता चलता है की सुलोचना रानी के उपन्यासों में नायिका को ही नहीं नायक को भी वे तवज्जो देती हैं। इस उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि पुरुष एक ही महिला के प्रति ईमानदार और निष्टवान रहने पर उसके प्यार को और उस प्रेमिका को पाने के लिए कुछ भी कर सकता है। यहाँ तक की उस प्रेमिका की खुशी के लिए उसे छोड़ने के लिए भी तैयार हो जाता है। जयंती, राजशेकर के मामा की लड़की रहती है इस बात का पता चलने पर राजशेकर जयंती को अपने घर में आश्रय देता है। अंत में दोनों में प्यार होता है और साथ में मिलकर रहते हैं। राजा राम मोहन राव कहते हैं कि "हम सेक्रेटरी उपन्यास की सफलता के कारणों का विश्लेषण करते हैं तो इसका मुख्य कारण जयंती की भूमिका में मिली प्रेरणा थी जिसने मध्यवर्गीय युवाओं की कल्पनाओं और आशाओं को स्पष्ट रूप दिया है। इस उपन्यास से हमे पता चलता है की जयंती जैसी सभी लड़कियां निम्न माध्यम वर्ग की गरीबी का शिकार है। पहनने के लिए कोई महंगी साड़ी नहीं है, छोटी-छोटी मौज मस्ती करने के लिए आर्थिक रूप से स्थिर नहीं है। अतः उच्च वर्ग की महंगी ज़िंदगी से अनभिज्ञ नहीं है। इन चरित्रों में उच्च आत्मा सम्मान आत्मविश्वास विनम्रता बातूनीपन के कारण ये पात्र पाठकों के लिए आकर्षक होते हैं"।

"मीना" उपन्यास में सुलोचना रानी ने अभिजात महिला कृष्णवेणी, मीना और मध्यवर्गीय महिला कमला, राजेश्वरी का उल्लेख बहुत सशक्त रूप से किया हैं। इस उपन्यास में कृष्णवेणी कमला के भाई हनमंतराव की पत्नी है और मीना उनकी बेटी है। राजश्वरी कमला की बेटी हैं। इस उपन्यास में कवयित्री ने कृष्णवेणी के पात्र बहुत ही शक्तिशाली रूप में चित्रित किया है। कृष्णवेणी

एक महिला संग की कार्यदर्शी और बिजनस वुमन है। कृष्णवेणी नियम और अनुशासन, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास से पूर्णरूप से युक्त महिला हैं। कृष्णवेणी का चरित्र ऐसा है कि वह चाहती है कि समाज में कोई भी उसकी ओर अपराध की दृष्टि से न देखे। वह एक आत्मनिर्भर महिला है। ठीक उसी की तरह उसकी बेटी मीना है लेकिन उसमें कुछ भिन्नता मिलती है। जैसे कि जब कमला को पैसों की जरूरत होती है तो कृष्णवेणी उनका अपमान करती है और वही जब कमला के बेटा कृष्णराव को खेत खरीदने के लिए पैसों की आवश्यकता होती है तो तब मीना उसकी मदत करती है और उसे खेत खरीद कर देती हैं। मीना में हमें मासूमियत, भोलापन, जिद्दीपन आदि देखाई देता है। वही राजेश्वरी के पात्र में हमें भारतीय नारी की झलक दिखाई देती है।

जैसे की उसमें त्याग की भावना, जितना भी कष्ट को सहलेनी की क्षमता, आज्ञा का पालन करना आदि मिलते हैं। राजेश्वरी ठीक मीना के विपरित है। मीना में हमें विद्रोह का भाव मिलता है लेकिन राजेश्वरी में नहीं। जब राजेश्वरी का विवाह उसे पूछे बिना तय कर देते हैं तब राजेश्वरी आज्ञाकारी लड़की की तरह उसे मान लेती है लेकिन मीना इसका विरोध करती है। जब राजेश्वरी कहने लगती है कि परिवारवालों की पसंद ही मेरी पसंद हैं । लेकिन अंत में मीना इस विवाह को सम्पन्न नहीं होने देती है। इस उपन्यास में एक ओर जिद्दीपन, गर्व, पैसों का घमंड, रिश्तों पर ज्यादा बल ना देनेवाले महिलाओं का उल्लेख हुआ है तो दूसरी ओर रिश्तों को संभालनेवाले, मासूम, भोले और सबको अपने साथ लेकर चलनेवाले महिलों का भी उल्लेख हुआ है। इस उपन्यास के स्त्री पात्रों में हमें क्रोध, संवेदनशील, विद्रोह का भाव, अन्याय के प्रति आवाज उठाना, परिवार को साथ लेकर चलना आदि रूप दिखाई देते हैं। पुरुष आधिपत्य समाज में सुलोचना रानी जी ने इस उपन्यास में परिवार और समाज चलाने का भार स्त्रीओं को दिया है। जैसे कि हनुमंत राव के परिवार का जिम्मा कृष्णवेणी संभालती है तो दूसरी ओर घर कमला संभालती है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि सुलोचना रानी ने इस उपन्यास में अभिजात और मध्यवर्ग के महिलाओं की मनोदशा का चित्रण किया है।

सुलोचना रानी जी का एक और उपन्यास **"सहजीवनम"** है। इस उपन्यास की नायिका ज्योत्स्ना है। जो कि खूबसूरत, निडर, अन्याय के प्रति आवाज उठाने वाली, विद्रोह भाव को प्रकट करने वाली, आधुनिक सोचवाली पढ़ी-लिखी महिला है। इस उपन्यास का नायक श्याम सुन्दर है।

इन दोनों की मुलाकात एक विहारयात्रा के दौरान होती है और पहले ही दृश्य में ये दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और इनकी यह मुलाकात विवाह तक जाती है। कॉलेज की पढ़ाई होने के बाद ज्योत्स्ना की एक महिला मित्र शांति की शादी रहती है जो की अपने बड़ी बहन की मृत्यु के बाद अपने जीजा जी के साथ दूसरी शादी करने के लिए तैयार होती है, जैसे ही इस बात का पता ज्योत्स्ना को चलता है तो वह शादी का विरोध करती है और उसे समझाती है की दूसरी शादी करके अपनी ज़िंदगी बर्बाद न करें और शादी रोकने के लिए वह उसके मित्र के माता-पिता से निडर होकर कहती है की यह शादी करके उसके जीवन से खिलवाड़ ना करे। यहाँ पर हमें ज्योत्स्ना का निडर स्वभाव दिखाई देता है। इसी बीच श्याम सुन्दर अपनी शादी बात लेकर ज्योत्स्ना के घर पहुंचता है और ये रिश्ता उसे भी पसंद आजाता है और दोनों की शादी हो जाती है। श्याम सुंदर की माँ पुरानी विचारधारावाली स्त्री है और वह ज्योत्स्ना को उसके नियमों का पालन करने को कहती है लेकिन ज्योत्स्ना पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारोंवाली महिला थी और वह उसके सास के खिलाफ थी। इसी बीच ज्योत्स्ना की मित्र आशा उसके बॉस के साथ शारीरिक संबंध रखकर नाजायज़ तरीके से बच्चे को जन्म देती है और ज्योत्स्ना के पास मदत के लिए आती है।

ज्योत्स्ना उसकी मदत करती है और वह बच्चे का पालन पोषण अपने घर में करने लगती है। पति और सास के पूछने पर कहती है ये मेरे मित्र का बच्चा और वह मर गई है अब से इसकी देखभाल मैं ही करूंगी। यह सुनकर पति और सास दोनों हताश हो जाते हैं और इसी बात को लेकर परिवार में तनाव आजाता हैं। जब परिवारवाले बच्चा रखने के लिए मना करते हैं तो वह घर छोड़ कर चले जाती है। यहाँ पर स्त्री के उस जिद्दीपन को कवयित्री दर्शाती है जो की सामान्य रूप से हर स्त्री में दिखाई नहीं देती है। घर छोड़ कर जाने के बाद ज्योत्स्ना को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है जो वह सबका सामना करके आगे बड़ती है। इससे कवयित्री यह कहना चाहती है की स्त्री जब एकबार ठान लेती है तो फिर वह किसी के आगे अपने हात नहीं फैलाती है।इसी तरह मुश्किलों का सामना कर जीवन बिता रही ज्योत्स्ना के बारे में जब उसके पति श्याम सुंदर को पता चलता है तो वह उसके पास जाता है और उसे समझा कर अपने पास लाता है। इससे उपन्यासकार हमें यह बताना चाहती है कि चाहे उसकी स्त्री कितनी भी गलतियाँ कर ले वह उन सबको भुलाकर अपने पास लेलेता है। यहाँ पर कवयित्री ने पुरुषों के नरमी और हमदर्दी का चित्रण करती है। अंततः श्याम सुन्दर और ज्योत्स्ना का मिलन होता है और श्याम सुन्दर ज्योत्स्ना के मित्र की लड़की को एक अमेरिकी दम्पत्ति गोद दे देता हैं। इस से हमे यह पता चलता है की

सुलोचना रानी जी इस उपन्यास में उस स्त्री का चित्रण किया है की जो हमें आम-तौर पर अपने आस-पास देखाई देती है जिस में आत्म सम्मान, जिद्दीपान, क्रोध आदि मिलते हैं।

निष्कर्ष

सुलोचना रानी जी तेलुगु साहित्य में अपनी एक अलग छवि को लेकर साहित्य में आगमन किया था। सुलोचना रानी के उपन्यास मीना, सहजीवनम और सेक्रेटरी में हम मध्यवर्गीय महिला के जीवन को देख सकते हैं। उनकी रचनाओं में अपने आस-पास की महिलाओं के जीवन में घटित घटनाएं जैसी प्रतीत होती हैं। स्त्री के संबंध में समाज में घटित हर घटना को उन्होंने अपने रचना के माध्यम से उसे समाज में लाया। इनकी रचनाओं में हमें मेहनत करती हुई स्त्री, परिवार का भार संभालती हुई स्त्री, पढ़ी लिखी स्त्री, उच्च वर्ग के सपने और मध्य वर्ग से सच्चाई से जूजती हुई स्त्री आदि का चित्रण मिलता है। सुलोचना रानी ने अपने रचनाओं के माध्यम से स्त्री शिक्षा की आवश्यकता को बढ़ावा दिया है, जैसे कि सहजीवनम उपन्यास की ज्योत्स्ना, मीना उपन्यास की मीना, सेक्रेटरी उपन्यास की जयंती को हम इसके उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। इनके पात्रों में पारिवारिक मूल्य और समाज के प्रति निष्ठा दिखाई देती है। इनके पात्र प्रासंगिक और वास्तविक प्रतीत होते हैं। सुलोचना रानी के स्त्री पात्रों में शोषण एवं अन्याय के प्रति विदरीह का भाव मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. सुलोचना रानी यद्दनपूड़ी, 1964, सेक्रेटरी, ज्योति पत्रिका, एमेस्को पब्लिकेशन पृ.सं. 1-5 और 120-150, हैदराबाद
2. सुलोचना रानी यद्दनपूड़ी, 1983, मीना, साहिती बुक्स प्रकाशन पृ.सं.10-50, विजयवाड़ा
3. सुलोचना रानी यद्दनपूड़ी, 2016, सहजीवनम, क्वालिटी पब्लिशर्स पृ.सं.1-10 और 100-150, हैदराबाद
4. वी.राजा राम मोहनराव, 2013, नवला हृदयम, VNR बुक वर्ल्ड पब्लिशर पृ.सं.7-15, गुन्टूर
5. https://sanchika.com/tag/secretary-novel/
6. https://pittagoda.wordpress.com/2016/04/15/meena-by-yaddanapudi-sulochana-rani-book-review/comment-page-1/

सोहेब खान
शोधार्थी, मौलाना आज़ाद नैशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
मो.न. 9121180895, ईमेल. sohebk788@gmail.com